SCHOOL BOOKS

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा
निर्धारित नवीनतम् एवं संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार

देववाणी संस्कृत

सहायक पुस्तिका

भाग –6 ... 2
भाग –7 ...11
भाग –8 ...22

कक्षा 6 से 8 के लिए

Book - 6

1 वन्दना

लिखित

1. (क) मा सद्‌गमय, तमसो; (ख) देवो, पितृ देवो
2. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✗

2 वर्णमाला

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii)
2. (क) वर्ण; (ख) 33; (ग) अयोगवाह; (घ) मात्रा
3. (क) ✗; (ख) ✓; (ग) ✗; (घ) ✓
4. (क) (ii); (ख) (i); (ग) (iv); (घ) (iii)
5. स्वर – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, उ
व्यंजन – क, च, ज, थ, प, फ, भ, व, य
6. (क) वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है, जिनके और टुकड़े नहीं किए जा सकते।
(ख) जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से किया जाए उसे स्वर कहते हैं, ये 13 होते हैं।
(ग) जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, वे व्यंजन कहलाते हैं।
(घ) जो न तो स्वर होते हैं न ही व्यंजन उनका प्रयोग भाषा में प्रायः होता रहता है उन्हें अयोगवाह कहते हैं– अनुस्वार (ˉ) विसर्ग (:)।

3 विभक्तयः

मौखिक

(क) पादकन्दुकेन (ख) शिक्षायै (ग) वृक्षेभ्यः (घ) सूर्यस्य (ङ) कुसुमानाम्

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) नेत्राभ्यां; (ख) शिक्षायैः; (ग) कूपात्; (घ) पुष्पाणाम्; (ङ) वृक्षेषु
3. (क) (iv); (ख) (i); (ग) (ii); (घ) (v); (ङ) (iii)
4. (क) बच्चे तेजी से दौड़ते हैं।
(ख) हम सभी पढ़ने के लिए विद्यालय जाते हैं।

(ग) लोग घरों से यहाँ आते हैं।

(घ) संजीव के पिता बगीचे की रक्षा करते हैं।

(ङ) शाम के समय लड़कियाँ बगीचे में खेलती हैं।

5. (क) इंद क्रीडाक्षेत्रे अस्ति।

(ख) रमेशः पठनाय विद्यालयं गच्छति।

(ग) उद्यानः ग्रामे बहिः अस्ति।

(घ) भ्रमराः कुसुमानाम् उपरि गुञ्जन्ति।

(ङ) वृक्षेषु पक्वानि फलानि सन्ति।

6. (क) ✓; (ख) ✓; (ग) ✗; (घ) ✓; (ङ) ✓

4 सर्वनामः परिचयः

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) एतानि; (ख) आवां; (ग) वानरौ; (घ) एतत्
3. (क) ✗; (ख) ✓; (ग) ✓; (घ) ✗
4. (क) (ii); (ख) (i); (ग) (iv); (घ) (iii)
5. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–

तत – वह	यत् – जो	अस्मद् – मैं/हम
एतत् – यह	किम् – क्या/कौन	युष्मद् – तू/तुम

(ख) संस्कृत में तीन वचन व तीन लिङ्ग होते हैं।

5 प्रथम-पुरुषः

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (i)
2. (क) मनोहरं; (ख) फलं; (ग) पुष्पाणि; (घ) भ्रमति
3. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✗
4. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (iv); (घ) (i)
5. (क) पिकः श्यामवर्णः अस्ति।

(ख) छात्राः विद्यालयं गच्छामः।

(ग) शिक्षिका लेखं लेखयामि।

(घ) मधुमक्षिके पुष्पाणां रसं पिबथः।

6 मम शरीरम्

मौखिक

(क) नेत्राभ्याम् (ख) दशः (ग) द्वौ

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)
2. (क) पादाभ्याम्; (ख) नासिकेन; (ग) नमामः; (घ) मुखेन्
3. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✓
4. (क) (iv); (ख) (iii); (ग) (i); (घ) (ii)
6. (क) अहं नेत्राभ्यां पश्यामि।
   (ख) अहं कर्णाभ्याम् आकर्णयामि।
   (ग) गजः चत्वारः पादैः सन्ति।
   (घ) अहं नासिकेन् जिघ्रामि।

7 मधुराः श्लोकाः

मौखिक

(क) उद्यमेन (ख) प्रियवाक्यप्रदानेन (ग) असत्यं (घ) उदारचरितानाम्

लिखित

1. (क) (i); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) सज्जनाः; (ख) सिध्यन्ति; (ग) उदारचरितानां; (घ) दरिद्रता
3. (क) ✗; (ख) ✓; (ग) ✓; (घ) ✗
4. (क) (ii); (ख) (iv); (ग) (i); (घ) (iii)
5. (क) श्रेष्ठाः जनाः परहिताय सुखं त्यजन्ति।
   (ख) सुप्तस्य सिंहस्य मुखे मृगाः न प्रविशन्ति।
   (ग) अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसां कुर्वन्ति।
   (घ) सर्वे जन्तवः प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति।
6.

	विभक्ति	वचनम्	लिङ्ग
(क)	प्रथमा	बहुवचनम्	पुल्लिङ्ग
(ख)	प्रथमा	एकवचनम्	पुल्लिङ्ग
(ग)	द्वितीया	एकवचनम्	पुल्लिङ्ग
(घ)	षष्ठी	बहुवचनम्	पुल्लिङ्ग
(ङ)	प्रथमा	बहुवचनम्	पुल्लिङ्ग

7. (क) स् + अ + त् + य् + अ + म्; (ख) भ् + अ + व् + अ + न् + त् + इ;
   (ग) ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ; (घ) स् + अ + र् + व् + ए;
   (ङ) ल् + ओ + क् + ए

8 मम विद्यालयः

मौखिक

(क) क्रीडाङ्गण (ख) सायं (ग) तिस्त्र (घ) दामोदर (ङ) भानूदये (च) विज्ञानविषयम्

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (i); (ग) (iii)

2.

सन्धि	सन्धि का नाम
(क) धनेश्वरी	गुण सन्धि
(ख) कुत्रास्ति	दीर्घ सन्धि
(ग) भानूदय	दीर्घ सन्धि
(घ) एकादशाध्यापकाः	दीर्घ सन्धि
(ङ) समयेनोपस्थितः	गुण सन्धि
(च) शीतर्तुः	गुण सन्धि

3. (क) कुत्र; (ख) छात्राः; (ग) अवकाशः; (घ) घण्टां

4.

लोट् लकार	लङ्लकार
(क) ते लेखं लेखिष्यन्ति।	ते लेखम् अलिखन्।
(ख) त्वं चित्रं दृक्ष्यसि।	त्वं चित्रम् अपश्यन्।
(ग) वयं दुग्धं पिबामः।	वयं दुग्धम् अपिबन्।
(घ) अहं प्रश्नं पृक्ष्यामि।	अहं प्रश्नम् अपृच्छन्।
(ङ) तौ श्लोकं वदिष्यतः।	तौ श्लोकम् अवदन्।

5. (क) विद्यालयं कति शिक्षकः सन्ति?
(ख) अत्र त्रय लिपिकाः सन्ति?
(ग) सुधीन्द्रः कुत्र अस्ति किम् च करोति?
(घ) सः दशम कक्षायां पठति।

9 योग्यः शिष्यः

मौखिक

(क) शिष्यान् (ख) कपोतम् (ग) कपोतम् (घ) आचार्यः

लिखित

1. (क) (i); (ख) (i); (ग) (i)

2. (क) आहूय; (ख) गृहीत्वा, बहिः; (ग) तादृशं; (घ) शिष्यः

3. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✗

4. (क) (ii); (ख) (i); (ग) (iv); (घ) (iii)

5. (क) आचार्य शिष्यान् एकम्-एकं कपोतम् अयच्छत्। स अवदत् स्व-स्व कपोतं कुत्रचित् एतादृशे स्थाने मुञ्चन्तु यत्र कोऽपि भवत् न पश्यतु।
(ख) सर्वे शिष्याः कपोतं गृहीत्वा आश्रमात् बहिः अगच्छन्।

(ग) सूर्यः, चन्द्रः, वृक्षाः, पादपाः इत्यादय मां पश्यन्ति।

(घ) सूर्यः, चन्द्रः, वृक्षाः, पादपाः इत्यादय सर्वे मां पश्यन्ति कुत्रापि एकान्ते स्थानं न पश्यति।

6.

	विभक्ति	वचन
(क)	द्वितीया	एकवचनम्
(ख)	प्रथमा	बहुवचनम्
(ग)	षष्ठी	एकवचनम्
(घ)	प्रथमा	बहुवचनम्

7. (क) आचार्याः; (ख) शिष्यम्; (ग) आश्रमेभ्यः; (घ) कपोतान्

8. (क) आचार्यः केभ्यः कपोतम् अयच्छत्?

(ख) के कपोतम् गृहीत्वा अगच्छन्?

(ग) कः अतीव प्रसन्नाः अभवत्?

(घ) गुरु केषु स्निह्यति?

10 धान्या मातुः महिमा

मौखिक

(क) आलः (ख) बुद्धिहीनः (ग) माता (घ) तस्य माता

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (ii)

2. (क) आलः; (ख) विद्यालयं; (ग) वैज्ञानिक; (घ) मातुः

3. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✗

4. (क) (iii); (ख) (iv); (ग) (i); (घ) (ii)

5. (क) सः अपृच्छत् – ''माताः! मूर्खः कः भवति?''

(ख) महान् वैज्ञानिकः अकथयत्— माता एव अस्माकं मार्गदर्शिकाः भवति। धन्य मातुः महिमा।

(ग) बालकः मातुः पाठयति।

(घ) सत्यम् एवं अस्ति— माता एव अस्माकं मार्गदर्शिकाः भवति।

6.

	विभक्ति	लिङ्ग	वचनम्
(क)	प्रथमा	पुल्लिङ्ग	एकवचनम्
(ख)	षष्ठी	पुल्लिङ्ग	एकवचनम्
(ग)	प्रथमा	स्त्रीलिङ्ग	एकवचनम्
(घ)	षष्ठी	पुल्लिङ्ग	एकवचनम्
(ङ)	षष्ठी	स्त्रीलिङ्ग	एकवचनम्

7. (क) जननी; (ख) पुत्रम्; (ग) उत्तमा; (घ) अध्यापिका; (ङ) सर्वश्रेष्ठ

8. (क) एकः बालकः तत्र आसीत्। (ख) बालकः मूर्खः आसीत्।

(ग) अहं पुस्तकं पठामि। (घ) त्वं कथं निराशः भवसि?

(ङ) सः बुद्धिहीनः अस्ति।

11 चत्वारि प्रियमित्राणि

मौखिक

(क) वने (ख) व्याधः (ग) मूषकः (घ) सर्वे मित्राणि

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (ii); (ग) (i)
2. (क) मित्राणि; (ख) एकस्मिन्; (ग) समीपं; (घ) जालम्
3. (क) ✓; (ख) ✓; (ग) ✗; (घ) ✓
4. (क) (iv); (ख) (iii); (ग) (ii); (घ) (i)
5. (क) काकः, कच्छपः, हरिणः, मूषकः।
   (ख) हरिणः व्याधः जालम् अबद्धत्।
   (ग) सर्वे मित्राणि वने वसन्ति।
   (घ) काकः, कच्छपः, मूषकः च प्रतीक्षां कुर्वन्ति।
   (ङ) हरिणः मुक्ता तस्य मित्राणि प्रसन्नाः अभवत्।
6. (क) तस्य मित्र; (ख) हरिणः; (ग) काकः; (घ) मूषकः
7. (क) ह् + अ + र् + इ + ण् + अ; (ख) म् + ऊ + ष् + अ + क् + अ; (ग) त् + र् + आ + ह् + इ
   (घ) व् + य् + आ + ध् + अ; (ङ) स् + व् + अ + ज् + आ + ल् + ए + न् + अ
8. (क) एकः हरिणः आसीत्।
   (ख) एकदा एकः व्याधः तम् जालेन् अबद्धत्।
   (ग) हरिणस्य मित्राणि तस्य प्रतीक्षाम् अकुर्वन्।
   (घ) काकः मूषकः कच्छपः च हरिणस्य समीपम् आनयत्।
   (ङ) मूषकः जालम् अकृन्तत्।
   (च) हरिणः मुक्तः अभवत्।

12 सूक्तयः

मौखिक

(क) मूर्खाः (ख) हस्तस्य (ग) कलहम् (घ) रथस्य (ङ) सत्येन (च) परिश्रमेण

लिखित

1. (क) (i); (ख) (iii); (ग) (iii)
2. (क) शास्त्रं; (ख) पुरुषकारेण; (ग) जनाः; (घ) मक्षिकाः
3. (क) ✗; (ख) ✓; (ग) ✓; (घ) ✗
4. (क) (ii); (ख) (i); (ग) (iv); (घ) (iii)
5. (क) मक्षिकाः व्रणमिच्छन्ति।
   (ख) शुष्कवृक्षाः मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।

(ग) साधवः शान्तिमिच्छन्ति।

(घ) सत्येन जयेत् आनृतम्।

6.

	विभक्ति	वचनम्
(क)	प्रथमा	एकवचनम्
(ख)	द्वितीया	एकवचनम्
(ग)	षष्ठी	एकवचनम्
(घ)	प्रथमा	बहुवचनम्
(ङ)	तृतीया	एकवचनम्

7. (क) भूपति; (ख) सज्जनाः; (ग) मूढ़ाः; (घ) परिश्रमेन्; (ङ) कर्णस्य

13 मम संकल्पः

मौखिक

(क) विद्यां (ख) सुखम् (ग) विद्यां (घ) क्रीडित्वा (ङ) रविवासरे

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)
2. (क) संकल्पं; (ख) चेन्नई; (ग) नियमपूर्वकं; (घ) सम्मानं
3. (क) ✗; (ख) ✓; (ग) ✗; (घ) ✗
4. (क) (ii) (a); (ख) (iv) (c); (ग) (i) (d); (घ) (iii) (b);
5. (क) अधुना राहुलः सर्वं कार्यं नियमपूर्वकं करोति।
   (ख) सः प्रतिदिनं व्यायामं करोति।
   (ग) राहुलस्य दिनचर्यां दृष्टवा पितामहः सन्तुष्टः भवति।
6. (क) श्वः त्वं खेलिष्यसि।
   (ख) श्वः वयं लेखं लेखिष्यामः।
   (ग) श्वः रोहणः धाविष्यति।
   (घ) श्वः यूयं गमिष्यसि।
   (ङ) श्वः तौ प्रसन्नौ भविष्यतः।

7.

	मूलधातु	वचनम्	पुरुष
(क)	क्रीड्	एकवचनम्	उत्तम पुरुष
(ख)	खाद्	द्विवचनम्	मध्यम पुरुष
(ग)	खाद्	एकवचनम्	प्रथम पुरुष
(घ)	खाद्	द्विवचनम्	मध्यम पुरुष
(ङ)	गम् (गच्छ)	एकवचनम्	उत्तम पुरुष

14 स्त्रीपुरुषयोः समाधिकारः

मौखिक

(क) मैत्रेयी (ख) भारती (ग) राजकीयसेवासु (घ) विवेचिका

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (iii); (ग) (i)

2. (क) प्राचीन समय में स्त्रियाँ यज्ञ और युद्ध में भाग लेती थी।
(ख) भारती ने स्वयं भी शंकर से शास्त्रार्थ किया था।
(ग) समान अधिकार निश्चय ही समाज को प्रगति पथ पर ले जाता है।
(घ) गार्गी ब्रह्मविषयक ज्ञान में निपुण, तेज बुद्धि, अध्यात्म तत्त्व के चिन्तन में, विवेचन करने वाली हुई थी।
(ङ) आधुनिक समाज में भी स्त्री पुरुष की समानता की प्राप्ति सबसे आगे हैं।

3. (क) निर्माणम्; (ख) प्राचीनकालादेव; (ग) भारती; (घ) कर्णमल्लेश्वरी

4. (क) वि; (ख) स; (ग) प्र; (घ) प्र

5. (क) तथा + एव; (ख) चन्द्र + उपरि; (ग) क्षेत्रः + अपि; (घ) शास्त्रः + अर्थे

6. (क) समाजे स्त्री पुरुषस्य महत्त्व समानः अस्ति।
(ख) स्त्री पुरुषस्य च समभावः प्राचीनकाले अस्ति।
(ग) सः युद्धेषु यज्ञेषु अपि भागं गृहणन्ति।
(घ) माता बालकानां प्रथमा शिक्षिका भवति।
(ङ) भारतस्य प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंहः पाटिलः सन्ति।
(च) तस्मात् भारतीय राजनीते महिलस्य महती भूमिका अस्ति।

7. (क) स्त्रियः पुरुषाश्च मिलित्वा समाजस्य निर्माणं कुर्वन्ति।
(ख) यदा स्त्री पुरुषयोः समभावो भवेत् तदा समाजस्य कल्याणं भवति।
(ग) प्राचीनकाले अस्माकं देशे गार्गी, अपाला, लोपामुद्रा, सावित्री, भारतीय विदुष्याः भवन्ति स्म।
(घ) वैदिकवाङमये मन्त्रदृष्टयः नार्य्यः अपाला, घोषा, रोमगा, विश्ववारा, लोपामुद्रा, सावित्री प्रभृतयश्च।
(ङ) याज्ञवल्क्यपत्नी मैत्रेयी अपि प्रज्ञावती सूक्ष्मविवेचिका परमतत्त्व चिन्तने दक्षा चासीत्।
(च) गार्गी याज्ञवल्क्येन सह शास्त्रार्थम् अकरोत्।
(छ) शङ्कर-मण्डनयो शास्त्रार्थे निर्णायिका मण्डनमिश्रस्य पत्नी भारती अभवत्।

15 पंजाब-प्रदेशः

मौखिक

(क) चण्डीगढ़ः (ख) श्रीहरमन्दर साहब (ग) पंजाबी (घ) सिक्खाः

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (ii); (ग) (iii)

2. (क) सुस्वास्थाः; (ख) नद्यः; (ग) पंजाब-प्रदेशे; (घ) सुक्तयः

3. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✓
4. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (iv); (घ) (i)
5. (क) पंजाब प्रदेशः कृषि प्रधानं राज्यम् अस्ति।
(ख) बैसाखी, लोहड़ी, गुरपरब इत्यादयः उत्सवाः सन्ति।
(ग) स्वर्णमन्दिरः अमृतसर नगरे अस्ति। इदं एकः सरोवरस्य मध्ये स्थितम् अस्ति।
(घ) 1947 तमे वर्षे यदा देशस्य विभाजनं जातं पंजाब प्रदेशः अपि विभक्तः जातः।

6.

	विभक्ति	वचनम्
(क)	षष्ठी	एकवचनम्
(ख)	षष्ठी	बहुवचनम्
(ग)	सप्तमी	बहुवचनम्
(घ)	तृतीया	एकवचनम्
(ङ)	चतुर्थी	एकवचनम्

16 मधुराणि वचनानि

मौखिक

1. (क) शर्करा द्राक्षा च मधुरा अस्ति।
(ख) मधु मधुरा भवति।
(ग) निद्रा चिन्तां दूरयते।
(घ) मधुरेभ्यो मधुरं मधुरवचनं अस्ति।

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (iii); (ग) (iii)
2. (क) द्राक्षा; (ख) दूरयते; (ग) किं न; (घ) केवलम्
3. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✗
4. (क) (ii); (ख) (iv); (ग) (i); (घ) (iii)
5. (क) त्रैलोक्येऽपि किञ्चन मधुरं मातृतुल्य नास्ति।
(ख) निद्रा, चिन्तां, व्यथां, क्लान्ति दूरयते।
(ग) विद्यया तेजः, वपुः, वीर्यं च वर्धते।
(घ) मङ्गलेभ्योऽपि मंगलं मधुरवचनम् अस्ति।
6. (क) मधु कीदृशं भवति?
(ख) का चिन्तां दूरयते?
(ग) कया तेजः वर्धते?
(घ) निद्रा कां, दूरयते
(ङ) का पावनेभ्योऽपि।
7. पुल्लिङ्ग – द्राक्षा
स्त्रीलिङ्ग – मधुरा, शर्करा, निद्रा, व्यथा, क्लान्ति, विद्या
नपुंसकलिङ्ग – मधुरम्, मधु, पावनम्, धनम्

Book - 7

1 वन्दना

मौखिक

1. स्वयं करें।
2. (क) सरस्वती, धिया; (ख) ईशावास्यमिदम्, त्यक्तेन

लिखित

3. (क) ✗; (ख) ✓; (ग) ✗; (घ) ✓

2 नृपस्य गजः

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) आरोहणाय; (ख) आरुह्य; (ग) मृत्योः; (घ) कुशलवृतान्तम्
3. (क) अब वह भार उठाने में भी असमर्थ था।
   (ख) यह मेरा प्रिय हाथी है।
   (ग) हाथी धीरे-धीरे बीमार हो गया।
   (घ) हाथी के मृत्यु का समाचार कौन निवेदन करेगा?
   (ङ) मैं यह नहीं कह सकता हूँ।
4. (क) एकः गजः नृपस्य अति प्रियोऽभूत।
   (ख) सः गजः स्वमिना आज्ञां पालयति स्म।
   (ग) कालक्रमेण सः गजः वृद्धा अभवत्।
   (घ) भूपः ग्रामेण स्वप्रासादं प्रतिनिवृत्तः
5. (क) नृपः तस्य रूपेण, मन्थरगत्या आज्ञाकरितया च प्रभावितो भूत्वा तस्मै बहु स्पृह्यति स्म।
   (ख) राजा ग्रामवासिभ्यः गजं समर्पयित्वा आदिशत् – 'एषः मम प्रियः गजः अस्ति। यूयं सर्वे सावधानतया भोजन-पानादिभिः अस्य सेवां कुरुतः। यः कोऽपि अस्य मृत्योः समाचारं मां श्रावयिष्यति, अहं तस्मै मृत्युदंडं दास्यामि इति।'
   (ग) सर्वेऽपि ग्रामवासिनः महता श्रमेण तं वृद्धं गजम् असेवन् किन्तु जराजीर्णशरीरः रूग्णश्च सः करी (गजः) एकस्मिन् दिने पंचत्वं गतः।
   (घ) सः वृद्धः राजसभामुपगत्य च न्यवेदयत् – 'महाराज। भवतः करी न किमपि खादति, न पिबति, नश्वसिति न च अंगानि चालयति।' राजा अकथयत् – किं गजः मृतः? वृद्धः प्रत्यवदत् – 'महाराज! अहम् एतत् कथयितुं न शक्नोमि। भवान् स्वयमेव प्रत्यक्षीकरोतु।'

6. (क) — (ii) — (v)
   (ख) — (iv) — (i)
   (ग) — (i) — (iii)
   (घ) — (v) — (ii)
   (ङ) — (iii) — (iv)
7. (क) कस्मिश्चिद् देशे एकः नृपः आसीत्।
   (ख) नृपस्य प्रासादे अनेके गजाः, अश्वा, उष्ट्राः च आसन्।
   (ग) सर्वेषु वाहनेषु एको गजः नृपस्य प्रियः अभवत्।
   (घ) नृपः स्नेहवशात् वृद्धमपि गजं प्रासादे एव अरक्षत्।
   (ङ) नृपः गजं ग्रामवासिभ्यः समर्पयन् आदिशत्।
   (च) यः कोऽपि गजस्य मृत्योः समाचारं दास्यति, अहं तं मृत्युदंडेन् दंडयिष्यामि।
   (छ) ग्रामवासिभिः सेवितोऽपि वृद्धः गजः पंचत्वं गतः ग्रामीणाः च चिन्तातुराः अभवन्।
   (ज) अन्ते एकः वृद्धः गजस्य मृत्योः समाचारं नृपाय न्यवेद्यत्।

3 कुसंगत्यागः

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) धनिकः; (ख)व्ययी; (ग) कुसंगत्यागाय; (घ) रूप्यकाणि।
3. (क) रामदीन ने सभी नौकरों को बुलाकर उन्हें ईनाम दिया था।
   (ख) धीरे-धीरे उसका पुत्र जवान हो गया।
   (ग) मैं मित्रों के साथ घूमने जाता हूँ।
   (घ) अब उसकी आँखों में सन्तोषभाव था।
   (ङ) वह मित्रों की सच्चाई और मेहनत का महत्त्व समझ गया था।
4. (क) सः पुत्रस्य अति स्नेहं करोति स्म।
   (ख) तस्य पुत्रः स्वच्छन्दतया व्ययीकरोति स्म।
   (ग) अधुना सः धूर्तैः मित्रैः परिवृतः सन्।
   (घ) सः स्व पितरि सह असाधुः व्यवहृतवान्।
   (ङ) अहं मित्रैः सह भ्रमणाय गच्छामि।
5. (क) धूर्तै मित्रैः परिवृतः सन् सः प्रतिदिनं यत्र-तत्र भ्रान्त्वा, भोजनालयेषु भुक्त्वा चलचित्रादिकं च वीक्ष्य रात्रौ विलम्बेन गृहं प्रत्यागच्छति स्म।
   (ख) यदा पुत्रः कुसंगति नऽत्यजत् तदा पिता तस्य याचनानाम् उपेक्षां कर्तुं प्रारभत।
   (ग) सः चिन्तापरोऽभवत् — 'मया येषां कृते सहस्त्रशः रूप्यकाणि व्ययीकृतानि ते मह्यं शतं रूप्यकाणि अपि दातुं नैव शक्नुवन्ति धिक् तानि मित्राणि।'

(घ) सः उद्योग स्वामिनमुपगम्य वृतिमयाचत् सायंकालं यावत् च परिश्रम्य शतं रूप्यकाणि उपार्जयत्। अधुना तस्य नयनयोः सन्तोषभावः आसीत्।

6. (क) धनः + अभावः; (ख) भोजन + आलयः; (ग) सहस + एव; (घ) स्नेह + एन

7. (क) (iii); (ख) (iv); (ग) (ii); (घ) (v); (ङ) (i)

4 गृध्रः -मार्जारः -कथा

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)
2. (क) वृद्धः; (ख) एकः; (ग) तम्; (घ) दुःखिता
3. (क) वे घोंसलों में अपने बच्चों का पालन करते थे।
   (ख) पक्षियों ने वृक्ष पर घोंसले बनाए हुए थे।
   (ग) वह उनके बच्चों की रक्षा करता था।
   (घ) वन में एक विशाल बरगद का पेड़ था।
4. (क) गृध्रः खगानां कृतज्ञः आसीत्।
   (ख) अहम् अधुना मांस भक्षणं न करोमि।
   (ग) एतत् विचार्य खगाः निश्चिन्ताः अभवन्।
   (घ) दुर्दैव-वशात् तत्र एकः मार्जारः आगच्छत्।
   (ङ) अन्ते गृध्रः खगाय अमारयत्।
5. (क) खगानाम् अनुकम्पया तस्य जीवन-निर्वाहः।
   (ख) खगाः स्व-आहारात् किञ्चित् भोजनं तस्मै यच्छन्ति स्म।
   (ग) स अचिन्तयत् – 'निस्संदेहम् एषः एतान् पक्षि-शावकान् खादितुम् इतः आगच्छति। किं करोमि? खगानां प्राण-संशयः जातः।'
   (घ) अन्ते निरपराधः गृध्रः हतः मार्जारः च पलायितः।

6.

	कर्तापद	**क्रियापद**
(क)	मार्जारः	आसीत्
(ख)	सः	अवदत्
(ग)	अहम्	करोमि
(घ)	एतत्	अभवन्

7.

	लकार	**पुरुष**	**वचनम्**
(क)	लट्	प्रथम	एकवचनम्
(ख)	लट्	प्रथम	बहुवचनम्
(ग)	लट्	मध्यम	एकवचनम्
(घ)	लट्	उत्तम	एकवचनम्
(ङ)	लङ्	प्रथम	बहुवचनम्

5 अहिंसैव जयति

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) लोगों को लूटना और मारना उसका प्रतिदिन का काम था।
   (ख) वह जिसे मारता था, उसकी अंगुली काटकर माला बनाकर गले में पहन लेता था।
   (ग) अंगुलिमाल के बुरे कामों से प्रजा बहुत दुःखी थी।
   (घ) राजा ने उसको पकड़ने के लिए बहुत प्रयत्न किए, और सैनिक बल को भेजा, परन्तु फिर भी सफल नहीं हुए।
   (ङ) बुद्ध के करुणा भाव को देखकर वह चकित हो गया और बुद्ध के सामने झुक गया।
3. (क) दैनिकं; (ख) करूणायाश्च; (ग) उपदेश प्रभावाद; (घ) दयाभावं
4. (क) पठित्वा; (ख) दृष्ट्वा; (ग) श्रुत्वा; (घ) पीत्वा; (ङ) नीत्वा; (च) त्यक्त्वा
5. (क) प्रजा + अतीव; (ख) अज्ञान + अन्धकारः; (ग) करुण + आर्द्र + भावम्; (घ) वृद्धः + तदा
6. (क) अङ्गुलिमालस्य लोकानां लुण्ठनं हननं च दैनिकं कृत्यम्।
   (ख) अङ्गुलिमालस्य प्रजाऽतीव दुःखिता आसीत्।
   (ग) राजा अङ्गुलिमालस्य निगृहणे साफल्यं नालभत्।
   (घ) राजा तस्य निग्रहणे बहु प्रायतत्, सैन्यबलं च प्रैषयत् परं तदपि साफल्यं नालभत्।

6 बुद्धिः एवं उत्तमा

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (i); (ग) (iii)
2. (क) एताम्; (ख) बालकः; (ग) निराशया; (घ) पञ्चलक्ष
3. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✓
4. (क) सः भिन्नप्रकारेण जनान् वञ्चयित्वा स्म।
   (ख) सः अनेक सुवर्ण मुद्राणां सञ्चयम् अकरोत्।
   (ग) एकः बुद्धिमान बालकः तस्य समीपम् आगच्छत्।
   (घ) सत्यम् एव कथ्यते– ''बुद्धिः एवं उत्तमा।''
   (ङ) तस्य सर्वा स्वर्णमुद्राणां तस्य अयच्छत्।
5. (क) सः भिन्नप्रकारेण जनान् वञ्चयित्वा धनसञ्चयं करोति स्म।
   (ख) नरः सर्वत्र घोषणाम् अकरोत् – ''यः कोऽपि एकां नवीनां कथां श्रावयिष्यति तस्मै अहम् एतत् सुवर्णपात्रं दास्यामि। किन्तु यदि सा कथा मया पूर्णश्रुता भविष्यति तदा सः मह्यं पञ्चशतं सुवर्णमुद्राः दास्यति।''
   (ग) जनाः सुवर्णपात्रस्य लोभेन एवं कथां श्रावयितुं नरस्य गृहम् अगच्छत्।

(घ) प्रत्येकं कथां श्रुत्वा वञ्चकः अन्ते वदति – 'एतां कथाम् अहं पूर्वमेव श्रुतवान।'
(ङ) वञ्चकः बालकाय सुवर्णपात्रेण सह सुवर्णमुद्राः अपि अयच्छत्।

6. (क) के अपूर्वा कथाम् अश्रावयन्?
(ख) वञ्चकः कस्मै सुवर्णपात्रम् अयच्छत्?
(ग) कस्य गृहे बहुमूल्यं सुवर्णपात्रम् आसीत्?
(घ) कः स्वपराजयं स्वीकृतवान्?

7. (क) न् + अ + ग् + अ + र् + ए
(ख) प् + ऊ + र् + व् + अ + म् + ए + व् + अ
(ग) स् + उ + व् + अ + र् + ण् + अ + प् + आ + त् + र् + अ + म्
(घ) स् + अ + त् + य् + अ + म् + ए + व् + अ
(ङ) ए + क् + अ + स् + म् + इ + न्

7 नीतिश्लोकाः

लिखित

1. (क) (i); (ख) (i); (ग) (iii)
2. (क) (ii); (ख) (iv); (ग) (i); (घ) (iii)
3. (क) गुस्से को शान्ति से जीतना चाहिए, दुष्ट को सज्जनता से जीतना चाहिए।
(ख) दृष्टि से पवित्र करके पैर रखना चाहिए, वस्त्र से छानकर (शुद्ध करके) पानी पीना चाहिए।
(ग) भोजन के अन्त में छाछ पीना चाहिए वैद्य से क्या प्रयोजन (कोई प्रयोजन नहीं)।
(घ) तोते की तरह भाषण करने और बगुले की तरह ध्यान करने वाला होना चाहिए।
4. (क) अक्रोधेन्; (ख) असाधु; (ग) असत्यम्; (घ) दानेन; (ङ) निशान्ते

8 अहम् आम्रम्

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (iii); (ग) (iii)
2. (क) (ii); (ख) (iv); (ग) (v); (घ) (i); (ङ) (iii)
3. (क) अहं त्वां प्रियफलम् आम्रम् अस्मि।
(ख) भोजनं खादित्वा जलं च पीत्वा पुष्टः अभवम्।
(ग) वृक्षस्य अधः पथिकाः विश्रामं कुर्वन्ति।
(घ) आम्रफलानि सर्वदा गुणकारणि भवति।
(ङ) मम जीवनं परोपकाराय एव।
4. (क) आम्रं मधुरं फलम् अस्ति।

(ख) भोजनं खादित्वा जलं च पीत्वा अहं पुष्टः अभवम्।

(ग) यदा वृक्षस्य अधः श्रान्ताः पथिकाः विश्रामं कुर्वन्ति, मम सन्तोषः जायते।

(घ) सूर्यस्य तीव्रेण आतपेन मम फलानि अधुना पक्वानि।

5.

	विभक्ति	वचनम्
(क)	प्रथमा	एकवचनम्
(ख)	तृतीया	एकवचनम्
(ग)	षष्ठी	एकवचनम्
(घ)	प्रथमा	बहुवचनम्
(ङ)	षष्ठी	बहुतवचनम्

6.

	लकार	वचनम्	पुरुष
(क)	लट्	एकवचनम्	मध्यम
(ख)	लङ्	एकवचनम्	मध्यम
(ग)	लट्	एकवचनम्	प्रथम
(घ)	लट्	बहुवचनम्	प्रथम
(ङ)	लट्	बहुवचनम्	प्रथम

9 शठं प्रति शाठ्यम्

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)

2. (क) तीन वचन होते हैं।

(ख) छः कारक हैं।

(ग) मैं बाजार जाता हूँ।

(घ) श्याम विद्यालय जाता है।

(ङ) देवदत्त आम खाता है।

3. (क) निवसति स्म; (ख) जाता; (ग) अत्रोटयत्; (घ) अपतत्; (ङ) व्यलपत

4. (क) करण; (ख) सम्प्रदान; (ग) कर्ता; (घ) अधिकरण; (ङ) सम्बन्ध; (च) कर्म

5. (क) धनः + उपार्जनाय; (ख) प्रति + आगच्छत; (ग) प्रति + अवदत्; (घ) दूरात् + आगच्छामि

6. (क) सः धनार्जनाय विदेशे गत्वा।

(ग) सः विदेशेन स्वगृहं प्रत्यागच्छ।

(घ) अस्य संसारे नित्यं कुत्राऽपि न अस्ति।

(ङ) तव पुत्रस्य आत्मना सह नयामि।

7. (क) सः धनोपार्जनाय विदेशं गन्तुमैच्छत।

(ख) तस्य गृहे पित्रोपार्जिता एका लौहमयी तुला आसीत्।

(ग) धनिकः स्वपुत्रः वणिक्-पुत्रः सह नद्यां स्नानाय प्रेषति।

(घ) वणिक्-पुत्रः स्नानं कृत्वा तं शिशुमेकस्यां गिरि-गुहायां प्रक्षिप्य।

(ङ) वणिक्-पुत्रः नृपस्य समक्षे अवदत् – ''न वदाम्यसत्यम्। यत्र लौहतुलां मूषकाः खादन्ति तत्र श्येनः अपि बालकं हरति।''

10 मासस्य दिवसाः

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (i)
2. (क) महापुरुषः गुरुनानकदेवस्य जन्मदिवसः कार्तिके अभवत्।
   (ख) षड्विंशति एकविंशतिः च कति भवन्ति।
   (ग) सप्ताहे सप्त दिवसाः भवन्ति।
   (घ) वर्षे द्वादशः मासाः भवन्ति।
3. (क) पूर्णिमा; (ख) पक्षौ; (ग) कृष्णपक्षस्य; (घ) उपस्थिताः
4. (क) सप्ताहस्य पञ्चं दिवसाः शुक्रवासरः भवति।
   (ख) मासस्य द्वौ पक्षौ भवति। 1. कृष्णपक्षः; 2. शुक्लपक्षः।
   (ग) दीपावली कार्तिक मासस्य अमावस्यां भवति।
   (घ) शुक्लपक्षस्य अन्तिमः दिवसः पूर्णिमा भवति।
5. (क) विंशतिः; (ख) दशः; (ग) चतुत्रिंशत्; (घ) सप्तरिंशत्; (ङ) चत्वारिंशत्।
6.

	लकार	**वचनम्**	**पुरुष**
(क)	लट्	बहुवचनम्	प्रथम
(ख)	लट्	एकवचनम्	प्रथम
(ग)	लृट्	बहुवचनम्	प्रथम
(घ)	लृट्	बहुवचनम्	प्रथम
(ङ)	लृट्	एकवचनम्	मध्यम

11 सुभाषितानि

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)
2. (क) (ii); (ख) (iv); (ग) (i); (घ) (iii)
3. (क) परद्रव्येषु लोष्ठवत् द्रक्ष्यति।
   (ख) मनुष्याणां महारिपुः आलस्यः अस्ति।
   (ग) सिंहस्य मुखे मृगाः स्वयं न प्रविशन्ति।
   (घ) मणिना सर्पः भयंकरः भवति।

4. (क) आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पंडितः भवति।
(ख) दुर्जनः मणिना भूषितः सर्पः भयंकरः भवति।
(ग) सुप्तस्य सिंहस्य मुखे मृगाः न प्रविशन्ति।
(घ) विद्यायाऽलंकृतोऽपि दुर्जनः परिहर्तव्यः।

5.

	विभक्ति	वचनम्
(क)	सप्तमी	बहुवचनम्
(ख)	षष्ठी	बहुवचनम्
(ग)	प्रथमा	बहुवचनम्
(घ)	षष्ठी	द्विवचनम्

6. (क) सताम्; (ख) यश; (ग) शत्रुम्; (घ) पुण्यः; (ङ) बुद्धिमानः
7. (क) (ii); (ख) (iv); (ग) (vi); (घ) (v); (ङ) (iii); (च) (i)

12 अतिलोभो न कर्तव्यः

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (i); (ग) (iii)
2. (क) साधुओं द्वारा कहा गया झूठा नहीं होता।
(ख) मञ्जरी सोने की हो गई।
(ग) उनके स्पर्श से जल भी सोने का गोला हो गया।
(घ) मायादास शोक से ऊँचे-ऊँचे विलाप करने लगा।
(ङ) मेरे द्वारा छुए गए पदार्थ सोने के हो जाएँ।
3. (क) वरय; (ख) अयाचयत्; (ग) जातानि; (घ) जाता; (ङ) आनयत्
4.

(क)	साधु + उक्तम्	–	उ	उ	ऊ
(ख)	सुन्दराः + इमानि	–	अः	इ	ण
(ग)	च + अवदत्	–	अ	अ	आ
(घ)	शोकेन + उच्चैः	–	अ	उ	ओ

5. (क) तस्य नामः राहुलः आसीत्।
(ख) तस्य जनकस्य नामः अजय सिंहः आसीत्।
(ग) तस्य जननीं नामः दयादेवी आसीत्।
(घ) सः एकदा क्रीडागने गत्वा।
(ङ) तत्र सः स्वजनकस्य सह गच्छ।
6. (क) राजा मायादासः अतिलुब्धः दरिद्रः इव जीवनम् आसीत्।
(ख) मायादासः राजा आसीत्।
(ग) अभीष्टं वरं वरय इति मुनिः अवदत्।
(घ) इदं वाक्यं राजा अवदत्।
(ङ) अतिलोभो न कर्तव्यः स तु दुःखस्य कारणम्।

13 ऋतुराजः वसन्त

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (ii); (ग) (i)
2. (क) (v); (ख) (iv); (ग) (ii); (घ) (i); (ङ) (iii)
3. (क) अयं ऋतुनां राजा अतः ऋतुराजः कथ्यते।
   (ख) वसन्त-ऋतौ प्रकृतेः सौन्दर्यम् दृष्ट्वा चित्तं प्रसीदति।
   (ग) सर्वाः जनाः प्रसन्नाः भवति। जनाः अन्योन्यस्य उपरि रंगान् प्रक्षिपन्ति प्रमुदिताः च भूत्वा गायन्ति नृत्यन्ति च।
4. (क) पुष्पेषु काः गुञ्जन्ति?
   (ख) पवनः कथं वहति?
   (ग) पवनः केषां सौरभम् आवहति?
   (घ) सर्वत्र कस्य वातावरणम् अस्ति?
5.

प्रथमा	ऋतुः	**ऋतु**	ऋतवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरु	**गुरु**
तृतीया	साधुना	**साधुभ्याम्**	**साधुभिः**
चतुर्थी	शिशवे	**शिशुभ्याम्**	शिशुभ्यः
पंचमी	साधोः	साधुभ्याम्	**साधुभ्यः**

6. वसन्तकालः सुखदः भवति। **वसन्त-ऋतौ** प्रकृतिःरमणीया भवति। सर्वतः चित्र विचित्राणि **कुसुमानि** विकसन्ति। **पुष्पेषु** भ्रमराः गुञ्जन्ति। **पवनः** मन्दं-मन्दं बहति। उद्यानेषु **जनाः** भ्रमन्ति, बालाः च **आनन्देन** क्रीडन्ति। बसन्तः ऋतुः **ऋतुराजः** कथ्यते।

14 श्रम एव विजयते

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (ii); (ग) (i)
2. (क) वहाँ द्वार आदि के निर्माण के लिए लकड़ी का बड़ा टुकड़ा ले जाया जा रहा था।
   (ख) किन्तु लकड़ी के अधिक भारी होने से बहुत प्रयत्न से भी वे असमर्थ हुए।
   (ग) यदि इनका आप सहयोग करते हैं, तो काम आसान हो जाएगा।
   (घ) सभी ने उसके सहयोग की प्रशंसा की।
   (ङ) नायक ने भी धन्यवाद दिया।

3. **पद** | **विभक्ति** | **वचनम्**

पद	विभक्ति	वचनम्
सैनिकानाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
अश्वात्	पञ्चमी	एकवचनम्
यानेन्	तृतीया	एकवचनम्
क्षमाम्	द्वितीया	एकवचनम्

4. (क) अधि; (ख) प्र; (ग) अभि; (घ) वि
5. (क) नायकः; (ख) वायुयानस्य; (ग) अश्वसादी; (घ) काष्ठखण्डः
6. (क) सैनिकानाम् आवासाय निर्माणकार्यं प्रचलद आसीत्।
   (ख) तेषां सैनिकानाम् एकः नायकः अपि आसीत्।
   (ग) सः अश्वाद् अवातरत्।
   (घ) कोऽपि कर्मणि गुरुता लघुता वा न भवति।
   (ङ) अहं पठत् न गच्छामि
   (च) अहं धाव न जानामि।
7. (क) द्वारादिनिर्माणहेतोः काष्ठस्य गुरुतरः खण्डः नीयते स्म।
   (ख) काष्ठस्य अतिभारवत्तवात बहुप्रत्यये अपि ते अक्षमाजाता।
   (ग) नायकः दूरतः एव अधिक बलप्रयोगाय तान् प्रेरयति स्म।
   (घ) नायकम् अवदत्– ''किं पश्यति भवान्? यदि एतेषां सहयोगं भवान् कुर्यात् तदा कार्यं सुकरं स्यात्।''

15 वृक्षारोपणम्

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)
2. (क) गुरिन्दरः राशिदया खालिदया च सह तटबन्धान् रचयति।
   (ख) प्रदूषितेन् वातावरणेन न केवलं स्वास्थ्यं नश्यति अपितु मानवजातेः अस्तित्वम् एव संकटग्रस्तं भविष्यन्ति।
   (ग) वृक्षाः अस्मभ्यं फलानि, पुष्पाणि, काष्ठानि, औषधानि तृणादीनि चापि यच्छन्ति।
   (घ) राशिदा, खालिद, गुरिन्दरः च केदारं खनन्ति।
   (ङ) वृक्षाः केवलं प्रकृतेः शोभाम् एव न वर्धयन्ति, अपितु वृक्षाणां सर्वे अवयवाः अस्माकम् उपयोगाय भवन्ति।
3. (क) निर्देशानुसारम्; (ख) महोदयः; (ग) अधुनैव; (घ) गैसादीन्; (ङ) प्राचार्या
4. (क) आनयतम्; (ख) पूरय; (ग) रचयति; (घ) मानयिष्यामः; (ङ) आनयावः; (च) जानीथ
5. (क) (iv); (ख) (vi); (ग) (v); (घ) (iii); (ङ) (ii); (च) (i)

6.

धातु	लकार	पुरुष	वचनम्
(क) ज्ञा	लट्	मध्यम	बहुवचनम्
(ख) कृ	लृट्	उत्तम	बहुवचनम्
(ग) ज्ञा	लट्	उत्तम	एकवचनम्
(घ) गम्	लट्	उत्तम	द्विवचनम्
(ङ) रूच	लट्	प्रथम	एकवचनम्

7.

विभक्तिः	वचनम्
(क) द्वितीया	बहुवचनम्
(ख) चतुर्थी	एकवचनम्
(ग) चतुर्थी	बहुवचनम्
(घ) सप्तमी	बहुवचनम्
(ङ) षष्ठी	बहुवचनम्

16 सुवचनानि

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)
2. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (iv); (घ) (i)
3. (क) खलस्य धनं मदाय भवति।
   (ख) सज्जनाय वसुधैव कुटुम्बकम्।
   (ग) महाजनस्य संसर्गः उन्नतिकारकः अस्ति।
   (घ) प्रियवादिनाम् कः परः न अस्ति।
4. (क) पररक्षणाय; (ख) लघुचेतः; (ग) श्रियम्; (घ) स्वदेशः
5. (क) खलस्य शक्ति परेषां परिपीडनाय भवति।
   (ख) लघुचेतसां गणना 'अयं निजः परः वा इति' भवति।
   (ग) महाजनस्य संसर्गः उन्नतिकारकः भवति।
   (घ) समर्थानां भारं न भवति।
6.

विभक्ति	वचनम्
(क) चतुर्थी	एकवचनम्
(ख) द्वितीया	एकवचनम्
(ग) षष्ठी	बहुवचनम्
(घ) षष्ठी	बहुवचनम्
(ङ) प्रथमा	बहुवचनम्

7. (क) वसुधा + एव; (ख) न + उन्नतिकारकः; (ग) सम् + सर्गः; (घ) कः + भार; (ङ) मुक्ताफल + श्रियम्

Book - 8

1 वन्दना

लिखित

1. (क) ओ३म् तेजोऽसि **तेजो मयि** धेहि।
   वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
   (ख) **ओजोऽसि** ओजो मयि धेहि।
   ओ३म् तेजस्वि **नावधीतमस्तु**।
2. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✓

2 मातृदेवो भव

मौखिक

1. (क) स्वयं करें।
2. (क) ज्वरेण; (ख) सतीशः; (ग) मुकुलः; (घ) सतीशः

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) उसका नाम सतीश है।
   (ख) अरे सतीश जाओ, वैद्य को ले आओ।
   (ग) यह खेलने का समय है मेरे मित्र आ गए हैं।
   (घ) उसी समय सतीश का मित्र मुकुल वहाँ आ गया।
3. (क) छात्रोऽस्ति; (ख) सतीशस्य; (ग) बहिः; (घ) सतीशस्य; (ङ) क्रीडाक्षेत्रात्
4. (क) मुकुलः; (ख) सतीशः; (ग) माता; (घ) मुकुलः
5.

	लकार	**पुरुष**	**वचनम्**
(क)	लङ्	प्रथम	एकवचनम्
(ख)	लङ्	प्रथम	एकवचनम्
(ग)	लोट्	मध्यम	एकवचनम्

6. (क) सतीशः वैद्यम् आनयत् तदा सतीशस्य जननी प्रमुदिता अभवत्।
   (ख) अभिवादनशीलस्य आयुर्विद्या यशोबलं वर्धन्ते।
   (ग) सतीशस्य उपदिशति श्रुत्वा सतीशः वैद्यम् आनयत्।
   (घ) सतीशः क्रीडानार्थम् अगच्छत्।

3 श्रृगालस्य चातुर्यम्

मौखिक

1. (क) महाचतुरकः; (ख) गजस्य; (ग) व्याघ्रः; (घ) व्याघ्रस्य

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (ii); (ग) (i)
2. (क) कदापि; (ख) मृत्युमुखे; (ग) नियुज्य; (घ) प्रकुपितः; (ङ) समशक्तिम्
3. (क) सिंहं दृष्ट्वा श्रृगालः अवदत् – 'स्वामिन्! अहं त्वदीयोलागुडिकः त्वदर्थे इयं गजं रक्षामि, एतं भक्षयतु स्वामी।'
   (ख) श्रृगालः विपिने स्वयम् मृतम् गजम् प्राप्तवान्।
   (ग) चित्रकं दृष्ट्वा लोमशः अचिन्तयत् – 'नूनं दृढ़दंष्ट्रो अय द्वीपी, तदनेन गजस्यास्य चर्मच्छदं कारयामि।'
   (घ) भिन्नां त्वचं विलोक्य श्रृगालः अवदत् – 'भो भगिनीसुत! शीघ्रं धाव इतः, तत्र सः सिंहः आगच्छति' इति।
4.

	किसने	**किसको**
(क)	श्रृगालः	चित्रकः
(ख)	श्रृगालः	सिंहः
(ग)	श्रृगालः	सिंहः
(घ)	सिंहः	श्रृगालः

5. घ, क, ङ, ग, च, ख
6. (क) शूरोयम्; (ख) प्रकुपितोयम्; (ग) दृष्टोस्मि; (घ) क्रुद्धोपरः; (ङ) सोभाषत

4 किं तर्तुं जानाति भवान्?

मौखिक

1. स्वयं करें।
2. (क) प्राध्यापकः; (ख) अरित्रमाध्यमेन; (ग) नाविकः; (घ) नौका

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) प्राध्यापकः; (ख) नाविकः; (ग) प्राध्यापकः; (घ) प्राध्यापकः; (ङ) नाविकः
3. (क) क्या तुमने संस्कृत भाषा पढ़ी है।
   (ख) जीवन का तीन भाग व्यर्थ हो गए।
   (ग) अध्यापक नाव पर चढ़ा।
   (घ) आप निश्चय ही जल के बीच में घूमें।

4. (क) जलविहारम्; (ख) गणितम्; (ग) अर्धांशः; (घ) वेगेन; (ङ) नदम्
5. (क) (iii); (ख) (iv); (ग) (ii); (घ) (v); (ङ) (i)
6. (क) गन्तुम्; (ख) चलितुम्; (ग) हसितुम्; (घ) क्रीडितुम्; (ङ) पठितुम्
7. (क) सः पठनाय आगच्छति। (ख) सः खादनाय गच्छति।
(ग) किं यूयं तर्तुं जानीथ? (घ) किं त्वं प्रतिदिनं क्रीडसि।
(ङ) आवां भ्रमणाय नद्याः तटे गच्छावः।

5 वसुधैव कुटुम्बकम्

मौखिक

1. (क) काकः; (ख) काकस्य; (ग) भ्रातः; (घ) स्वार्थी; (ङ) उदारहृदय

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)
2. (क) एकस्मिन्; (ख) ग्रीष्मकाले; (ग) अभिमानी; (घ) सहर्षम्; (ङ) वर्षापर्यन्तम्
3. (क) भीषणे ग्रीष्मकाले सर्वत्र शुष्कम् अभवत्।
(ख) सः अकथयत् गच्छ, गच्छ। अत्र स्थानं न अस्ति।
(ग) चटका सर्वम् अवगम्य काकः अवदत् – "भ्रातः। चिन्तां मा कुरु। अहम् सर्वम् अवगच्छामि। अहम् तव प्रतीक्षायाम् आसम्। अन्तः आगच्छतु।"
(घ) अन्ते काकः अचिन्तयत् – 'अहं तु स्वार्थी अस्मि परम् एषा उदार हृदया अस्ति।"
(ङ) वर्षाकालात् काकः पुनः नवीनगृहस्य निर्माणं करोति।
4. (क) कस्या गृहं नष्टं अभवत्? (ख) काकस्य गृहं कस्य नष्टम् अभवत्?
(ग) चटका काकः च कुत्र अगच्छताम्? (घ) काकः किम् आसीत्?
5. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (iv); (ग) (i)
6. ग, क, ख, ङ, घ
7.

	विभक्ति	**वचनम्**
(क)	प्रथमा	एकवचनम्
(ख)	तृतीया	एकवचनम्
(ग)	षष्ठी	एकवचनम्
(घ)	द्वितीया	एकवचनम्
(ङ)	प्रथमा	द्विवचनम्

6 श्लोक-समुच्चयः

मौखिक

1. (क) अभिवादनशीलस्य; (ख) वस्त्रपूतम्; (ग) विदेशेषु; (घ) मनःपूतम्

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (iii)

2. (क) वर्धन्ते; (ख) शीलम्; (ग) दृष्टिपूतम्; (घ) पिबेत्।
3. (क) (iv); (ख) (iii); (ग) (i); (घ) (ii)
4. (क) अभिवादनशीलस्य आयुर्विद्या यशोबलं वर्धन्ते।
(ख) तस्य जिह्वाग्रे मधुं तिष्ठति हृदि च हलाहलं भवति।
(ग) शीलं सर्वत्र वैधनम्।
(घ) वस्त्रपूतं जलं पिबेत् मनःपूतं च समाचरेत्।
5. (क) अभिवादनशीलः जनाः वृद्धस्य सेवा करोति।
(ख) दुर्जनः विश्वासयोग्यं न भवेत्।
(ग) विदेशेषु विद्या धनं भवति।
(घ) धर्माय पूतं वदेत्।

6.

	विभक्तिः	**वचनम्**
(क)	षष्ठी	एकवचनम्
(ख)	द्वितीया	एकचनम्
(ग)	सप्तमी	बहुवचनम्
(घ)	द्वितीया	बहुवचनम्
(ङ)	द्वितीया	एकवचनम्

7.

	लकार	**पुरुष**	**वचनम्**
(क)	लट्	प्रथम	एकवचनम्
(ख)	विधिलिङ्	प्रथम	एकवचनम्
(ग)	लट्	प्रथम	बहुवचनम्
(घ)	लोट्	प्रथम	बहुवचनम्
(ङ)	लोट्	प्रथम	एकवचनम्

7 ''अविश्वस्ते न विश्वसेत्''

मौखिक

1. (क) मूषकसमूहस्य; (ख) सूर्यम्; (ग) शृगालः; (घ) मूषकाः

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (ii); (ग) (i)
2. (क) चतुरः; (ख) वायुः; (ग) हृष्टः-पुष्टः; (घ) शंकाशीलाः
3. (क) (iii); (ख) (iv); (ग) (v); (घ) (vi); (ङ) (i); (च) (ii)
4. (क) शृगालः मूषकान् खादितुम् इच्छन् सः मूषकाणां बिलस्य समीपं गच्छति।
(ख) शृगालस्य मुखम् उदघाटितेन् सूर्यं प्रति अस्ति।
(ग) मूषकाः प्रतिदिनं तं शृगालं सेवितुं तत्र आगच्छन्ति स्म।
(घ) अग्रिमें दिवसे योजनानुसारं मूषकाः दूरं गच्छन्ति।
(ङ) मूषकराजः कूर्दित्वा शृगालं प्रहरति।

5. (ख); (क); (ग); (घ); (ङ)
6. (क) शृगालः कान् अनुसरति? (ख) मूषकाः कस्मात् बहिः आगच्छन्ति?
(ग) मूषकराजः कथं कथयति? (घ) काः चकिताः भवन्ति?
(ङ) मूषकाः कैः शृगालस्य नाशम अकुर्वन्?
7. (क) युवती खादितवती।; (ख) पुत्री निवेदितवती; (ग) जननी दत्तवती; (घ) सुता नतवती; (ङ) मूषिका इतस्ततः भ्रमितवती।

8 वृक्षाणाम् उपादेयता

मौखिक

1. (क) वृक्षाम्; (ख) पुष्पाणि; (ग) जीवितम्; (घ) वृक्षाः

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii)
2. (क) आम्राणि; (ख) वृक्षाः; (ग) परोपकाराय; (घ) वातावरणस्य
3. (क) अद्यत्वे वृक्षाणां संख्या प्रतिदिनम् अल्पतरा संजायते।
(ख) हरिताः वृक्षाः, पुष्पिताः वृक्षाः, फलिनः वृक्षाः, छात्रा-वृक्षाः–सर्वविधाः वृक्षाः अस्मान् महत् उपकुर्वन्ति।
(ग) प्राणिमात्रहिताय वृक्षाणां रक्षा अस्माकं परमं कर्तव्यम् अस्ति।
(घ) वृक्षाणां जीवनेन, अस्माकं जीवनं तेषां संरक्षणेन अस्माकं संरक्षणम् इति न विस्मर्तव्यम्। अतः जीवनं रक्षितुं वृक्षाः रक्षितव्याः।
4. (क) वृक्षाणां हरीतिमा दृष्टिं प्रीणयति।
(ख) तरवः सर्वेषां जीवनं सुखमयं कुर्वन्ति।
(ग) तरूणाम् आरोपणाय तेषां संरक्षणं कुर्वेत्।
(घ) वृक्षाणां जीवनेन अस्माकं जीवनम् अस्ति।
(ङ) वृक्षाणां रक्षां अस्माकं कर्तव्यम् अस्ति।
5. (क) अद्यत्वे केषां महती आवश्यकता?
(ख) तरवः सर्वेषां जीवनं कीदृशी कुर्वन्ति?
(ग) वृक्षाः केभ्यः आश्रयं यच्छन्ति?
(घ) वृक्षाः स्वयं कुत्र तिष्ठन्ति?
6.

	विभक्ति	वचनम्
(क)	षष्ठी	बहुवचनम्
(ख)	द्वितीया	एकवचनम्
(ग)	चतुर्थी	बहुवचनम्
(घ)	चतुर्थी	एकवचनम्
(ङ)	षष्ठी	एकवचनम्

9 ऋतुबोधः

मौखिक

1. (क) वाटिकायाम्; (ख) पिकः; (ग) षड्; (घ) ग्रीष्म ऋतौ

लिखित

1. (क) (iii); (ख) (i); (ग) (i)
2. (क) (iii); (ख) (i); (ग) (v); (घ) (ii); (ङ) (iv)
3. (क) होलिकोत्सवे जनाः मिलित्वा परस्परं रंगविलेपनं कुर्मः मिष्टान्नानि च खादामः।
   (ख) ते क्रमेण-बसन्तः ग्रीष्मः वर्षा, शरद्, हेमन्तः शिशिरः, च सन्ति।
   (ग) शरद् काले विजयादशमी दीपावली चेति उत्सवाः भवन्ति।
   (घ) सरस्वती पूजनं बसन्त अवसरे भवति।
4. (क) गर्जन्ति; (ख) कुर्वन्ति; (ग) राजते; (घ) विकसन्ति।
5. (क) होलिकोत्सवः; (ख) कान्तिऽपि; (ग) वर्षार्तौ; (घ) प्रच्छत्
6.

	विभक्तिः	वचनम्	लिंगम्
(क)	सप्तमी	बहुवचनम्	स्त्रीलिङ्गम्
(ख)	प्रथमा	बहुवचनम्	नपुंसकलिङ्गम्
(ग)	प्रथमा	एकवचनम्	पुल्लिङ्गम्
(घ)	सप्तमी	बहुवचनम्	स्त्रीलिङ्गम्
(ङ)	चतुर्थी	एकवचनम्	स्त्रीलिङ्गम्

10 वीराङ्गना विश्पला

मौखिक

1. स्वयं करें।
2. (क) खेलः; (ख) विश्पला; (ग) पादौ; (घ) अश्विनी कुमारौ

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) वह खेलने के विषय में बहुत कुशल और विशेषज्ञ थे।
   (ख) उसकी पत्नी युद्ध निपुण और बहादुर थी।
   (ग) विश्पला ने शत्रुओं को जीतकर धन जीत लिया था।
   (घ) उन दोनों ने विश्पला के लोहे के बने हुए दोनों पैरों को जोड़ दिया।
3. (क) खेलः; (ख) युद्धनिपुणा; (ग) युद्धं कुर्वन्ति; (घ) हतोत्साहा
4. (क) विश्पला एकदा युद्धे शत्रुभिः परिवेष्टिता जाता।

(ख) विश्पला अतीव युद्धनिपुणा वीराङ्गना च आसीत्।

(ग) युद्धे तस्याः द्वौ पादौ छिन्नौ सा च विकलाङ्गी अभवत्।

(घ) सः पुनः युद्धं कृत्वा शत्रुभिः च जितवती।

5. (क) वीर + अंगना; (ख) विकलः + अंगी; (ग) नः + उपकरणे

6. (क) विश्पला युद्धनिपुणा वीराङ्गना च आसीत्।

(ख) सा राजा खेलस्य पत्नी आसीत्।

(ग) अगस्त्य तस्याम् एव रात्रौ देवचिकित्सकौ अश्विनीकुमारौ आहूतवान्, तौ च विश्पलायै लौहनिर्मितौ पादौ अकल्पयताम्।

(घ) युद्धे तस्याः द्वौ पादौ छिन्नौ अभवत्।

(ङ) उत्साहयुक्ता विश्पला शत्रुभिः निहितम् धनम् जितवती।

11 सुवचने का दरिद्रता

मौखिक

1. (क) दानवती; (ख) वृत्ततः; (ग) यत्नेन; (घ) ज्ञानम्

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)

2. (क) श्रमवती; (ख) वक्तव्यम्; (ग) अक्षीणः, क्षीणः; (घ) भारभूताः

3. (क) यस्य वाणी रसवती, क्रिया श्रमवती लक्ष्मीः च दानवती भवन्ति तस्य जीवनं सफलं भवति।

(ख) सर्वे जन्तवः प्रियवाक्य-प्रदानेन तुष्यन्ति।

(ग) वित्तं गच्छति आगच्छति च।

(घ) विद्या-तप-दान-शील-गुण-धर्मेभ्यः हीनाः जनाः संसारे पशुवत् आचरन्ति।

4. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (iv); (घ) (v); (ङ) (i)

5.

	विभक्तिः	**वचनम्**
(क)	षष्ठी	एकवचनम्
(ख)	द्वितीया	एकवचनम्
(ग)	तृतीया	एकवचनम्
(घ)	प्रथमा	बहुवचनम्
(ङ)	षष्ठी	एकवचनम्

6.

	लकार	**वचनम्**	**पुरुष**
(क)	लट्	एवकचनम्	प्रथम
(ख)	लट्	बहुवचनम्	प्रथम
(ग)	लट्	द्विवचनम्	मध्यम
(घ)	लट्	एकवचनम्	उत्तम
(ङ)	लट्	बहुवचनम्	उत्तम

12 आदिकविः वाल्मीकिः

मौखिक

1. स्वयं करें।

2. (क) वाल्मीकिः; (ख) शिष्यैः; (ग) क्रौञ्च पक्षी; (घ) कवित्वम्

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)

2. (क) एक बार वह शिष्यों के साथ स्नान करने के लिए तमसा नदी के किनारे गए।
(ख) रास्ते में एक शिकारी द्वारा घायल एक क्रौञ्च पक्षी को देखा।
(ग) यह सुनकर उसकी दयनीय दशा को देखकर दयालु ऋषि द्रवित हो गए।
(घ) यही श्लोक लौकिक संस्कृत साहित्य की आदिकाव्य रचना बनी।
(ङ) यहाँ कवि के अनेक प्रकार के तथ्यों का वर्णन है।

3. (क) वाल्मीकि; (ख) व्याधेन; (ग) कविपदं; (घ) कवित्वं, ब्रह्मा; (ङ) संस्कृतस्य

4.

	विभक्ति	**वचनम्**
(क)	तृतीया	बहुवचनम्
(ख)	द्वितीया	एकवचनम्
(ग)	प्रथमा	द्विवचनम्
(घ)	षष्ठी	एकवचनम्

5. (क) सर्वा छात्रः स्नातुंः नद्याः तटे अगच्छत्।
(ख) वाल्मीकिरामायणे राम चरितं वर्णय।
(ग) वाल्मीकिः क्रौञ्च्याः रोदनम् अशृणोत्।
(घ) ब्रह्मा आकाशवाण्या आदिशत्।
(ङ) महापुरुषाणां चरित्रस्य अनुसरणम् अकरोत्।

6. (क) वाल्मीकिः स्नातुं तमसानद्याः अगच्छत्।
(ख) विद्धं क्रौञ्चपक्षिणं दयनीयं दशां दृष्ट्वा च कारूणिकः ऋषि द्रवितोऽभवत्।
(ग) ब्रह्मा आकाशवाण्या आदिशत् – ''ऋषे! कुरु रामायणं काव्यं। तत्र च रामचरितं वर्णय, येन रामस्य पुण्यं चरित्रं विदित्वा लोकाः सन्मार्गस्यानुसरणम् कुर्युः।''
(घ) वाल्मीकिना श्लोकबद्धा रामायणीकथा लिखिता।
(ङ) संस्कृतस्य आदिकविः वाल्मीकिः।

13 विश्वबन्धुत्वम्

मौखिक

1. स्वयं करें।

2. (क) बन्धुत्वस्य; (ख) उदारचरितनाम्; (ग) रक्तम्; (घ) स्वार्थपरायणतया; (ङ) बन्धुतायाः

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) आकाशे; (ख) विश्वयुद्धयोः (ग) वसुधैव; (घ) भवति
3. (क) सभी लोगों की भलाई बन्धुत्व के बिना नहीं होती है।
   (ख) कोई भी दुख का भागी न हो।
   (ग) बन्धुत्व के बिना लोग कष्ट का अनुभव करते हैं।
   (घ) इसलिए आवश्यकता है कि मनुष्य बन्धुता को स्थापित करे।
   (ङ) यह संसार अनेकों समस्याओं से पीड़ित है।
4. (क) साम्प्रतम् अखिले जगत कलहस्य अशान्तेः च साम्राज्यं व्याप्तम् अस्ति।
   (ख) विश्वबन्धुत्येव एकमात्र सुखस्य कारणम् अस्ति।
   (ग) सर्वा मानवानां हृदयं विशालं स्तः।
   (घ) सर्वे मानवाः सुखिनः भवः।
   (ङ) उदारचरितानां वसुधैव कुटुम्बकम्।
5. (क) सर्वजनहितं सर्वेजनसुखं च बन्धुत्वं बिना न सम्भवति।
   (ख) शान्ति स्थापनार्थं संयुक्तराष्ट्रसंघः निर्गुटान्दोलनम्, अन्यानि संघटनानि च सततं प्रयत्नं कुर्वन्ति।
   (ग) विश्वबन्धुत्वस्य भावना नितान्तम् अपेक्षिता वर्तते।
   (घ) सर्वेषां च नियन्तैकः एव अस्ति।

14 लोभो मूलमापदाम्

मौखिक

1. (क) गजस्य; (ख) गजः; (ग) राज्येन्; (घ) लोभः

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (i); (ग) (iii)
2. (क) (iii); (ख) (iv); (ग) (v); (घ) (ii); (ङ) (i)
3. (क) यदि अस्य कथञ्चित मृत्युः भवेत् तर्हि अस्माकं चिरकालं यावत् न कोऽपि भोजनस्य चिन्ता स्यात्।
   (ख) श्रृगालः अन्तर्हसन् अवदत् – 'क्षणम् तिष्ठतु एवं आगच्छामि।'
   (ग) गजस्य मरणात् अनन्तरं श्रृगालाः च तस्य गजस्य मांसं बहूनि दिनानि पर्यन्तं सानन्दम् अखादन।
   (घ) आपदां मूलं लोभः अस्ति।
4. (क) श्रृगालाः; (ख) गजः; (ग) श्रृगालः; (घ) गजः
5. (क) निः; (ख) प्र; (ग) प्र; (घ) अनु; (ङ) आ

6.

लकार	वचन	पुरुष
(क) विधिलिङ	एकवचनम्	प्रथम
(ख) लट्	बहुवचनम्	प्रथम
(ग) लट्	एकवचनम्	उत्तम
(घ) लट्	एकवचनम्	प्रथम
(ङ) विधिलिङ	एकवचनम्	मध्यम

15 अस्माकम् उत्सवाः

मौखिक

1. स्वयं करें।
2. (क) प्रकाशस्य; (ख) गुरुनानकदेवस्य; (ग) संयावम्; (घ) क्रिसमस

लिखित

1. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (i)
2. (क) ईसामसीह ने क्रिसमिस के दिन अपने जन्म से भूमि को सुशोभित किया।
   (ख) रमजान मास की समाप्ति के बाद ईद-उल-फितर नामक त्योहार मनाया जाता है।
   (ग) ईद के त्योहार पर लोग सम्बन्धियों और मित्रों के घर जाते हैं।
   (घ) सभी लोग अपने घरों को दीपों की कतारों से सजाते हैं।
3. (क) गुरुद्वारं; (ख) उपहारान्; (ग) पराकाष्ठाम्; (घ) एकमासं
4. (क) लक्ष्मीः + पूजनम्; (ख) सिक्ख + धर्मः; (ग) ख्रीष्टः + उपासना; (घ) पीत + अम्बरम्; (ङ) चोर + भयम्
5. (क) वीभीष्व + आपणेषु; (ख) इष्टमित्रः त्राण्य + अपि; (ग) अप्यः + आयोजन्ति; (घ) कार्तिक + मासस्य + एव; (ङ) विशेषरूपेणः + उत्सवान्
6. (क) दीपावली कस्य उत्सवः अस्ति?
   (ख) दीपावली महोत्सवे रात्रौ कस्या पूजनं भवति?
   (ग) कः गुरुग्रन्थ साहेब इति धर्मग्रन्थं शृण्वन्ति?
   (घ) ईसाईजनानां रमणीयं पर्व किं नामकम् अस्ति?
7. (क) दीपावली प्रकाशस्य उत्सवः अस्ति।
   (ख) सिक्खजनाः गुरुग्रन्थसाहेबः नमयित्वा।
   (ग) ईसाईजनाः क्रिसमस दिवसे गिरजाघरे प्रार्थनां कुर्वन्ति?
8. (क) कार्तिक मासस्य अमावस्याम्।
   (ख) कार्तिक मासस्य पूर्णिमायाम्।
   (ग) क्रिसमसवृक्षस्य निर्माणमपि।
   (घ) एकमासम् दिवा उपवसन्ति।

16

मधुराणि वचनानि

मौखिक

1. (क) विनयम्; (ख) शास्त्रम्; (ग) सुखिनः; (घ) मनुष्याणाम्

लिखित

1. (क) (i); (ख) (ii); (ग) (iii)

2. (क) (ii); (ख) (iii); (ग) (iv); (घ) (v); (ङ) (i)

3. (क) बुद्धि जनानां वास्तविकरूपे बलं भवति।
(ख) अत्र संसारे सत्यं विजयम् असत्यं च पराजयं प्राप्नोति।
(ग) मनुष्याणां शरीरेषु महान शत्रुः आलस्यं भवति।
(घ) अस्यां सूक्त्यां वर्तते-सर्वे भवन्तु सुखिनः।

4.

	विशेषण	विशेष्य
(क)	गरीयसी	जननी, जन्मभूमि
(ख)	शरीरस्थ, महान्	रिपुः
(ग)	सुखिनः	सर्वे
(घ)	आद्यम्	व्यर्थसाधनम्

5. (क) विद्या अर्थात् ज्ञान मनुष्य को विनम्रता देती है। लोग विद्या से नम्रता को पाते हैं। अतः विद्या को पाकर अभिमान नहीं करना चाहिए।
(ख) शास्त्रों का ज्ञान ही मनुष्य की असली आँख है ज्ञान की शक्ति से ही मनुष्य ताकत (शक्ति) प्राप्त करता है। इसलिए जो बुद्धि वाला है वही वास्तव में शक्तिशाली है।
(ग) संसार में सत्य की ही जीत होती है, असत्य अर्थात् झूठ की नहीं। इसलिए सदा सच बोलना चाहिए।
(घ) इस संसार में सभी सुख को प्राप्त हों यही हमारी इच्छा है। इस संसार में कोई भी दुखी न हो। सभी सुख से युक्त हो।

6.

	विभक्तिः	**वचनम्**
(क)	द्वितीया	एकवचनम्
(ख)	षष्ठी	एकवचनम्
(ग)	षष्ठी	बहुवचनम्
(घ)	सप्तमी	बहुवचन्
(ङ)	प्रथमा	एकवचनम

7. (क) जनकः; (ख) असत्यम्; (ग) श्वेतः; (घ) मूर्खः; (ङ) मित्रम्